Amritpath Monthly

ओ३म्

समाचार पत्र पंजीयन सं०
UTTHIN / 2003 11080

अंक-4 | जुलाई - अगस्त 2024 | वर्ष-21

समस्त देशवासियों को आजादी के महापर्व

15 AUGUST

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

माँ भारती को गुलामी की बेड़ियों से आज़ादी दिलाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानियों को कोटि-कोटि नमन।

अमृत पथ

200 महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) का मासिक मुख पत्र

आर्य समाज बी.एच.ई.एल. में वैदिक संस्कार चरित्र निर्माण शिविर

आर्य समाज मन्दिर करणपुर की कार्यकारिणी

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम में संस्कार शाला शिविर का समापन समारोह

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अमृत पथ

वर्ष-21 अंक-4

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) का मुख पत्र
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत
उठो, जागो, परमात्मा देव से वरदान प्राप्त करो

–: संस्थापकः–
श्री यशपाल आर्य जी

–: संरक्षक :–
डॉ० महावीर प्रसाद अग्रवाल जी
प्रति कुलपति पतंजलि योग पीठ

–: परामर्शदाता मण्डल :–
डॉ० रघुवीर वेदालङ्कार जी
डॉ० योगेश शास्त्री जी
आचार्य डॉ० धनन्जय आर्य जी
आचार्य डॉ० विनय विद्यालंकार जी

–: प्रबन्ध सम्पादक :–
श्री ज्ञान चन्द गुप्ता आर्य जी
9897346730

–: सह प्रबन्ध सम्पादक :–
श्री मनमोहन जी
9149259685

–: सम्पादक :–
श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी
9837011321
श्री चन्द्र प्रकाश जी
9761939183

–: सह सम्पादक :–
श्री सुधीर गुलाटी जी
7060299951

–: कार्यालय :–
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०)
आर्य समाज मन्दिर, धामावाला,
देहरादून - 248001

समाचार पत्र पंजीयन सं०
UTTHIN /2003 /11080

मूल्य
एक प्रति : रू.20/- वार्षिक : रू.200/-
आजीवन : रू.2000/-
Email : aryapsuk@gmail.com
Facebook : Arya Pratinidhi Sabha Uttarakhand

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1	क्या अन्य मतावलम्बी हिन्दू बन सकता है ?	2-3
2	मनुष्य के लिये चरित्र का महत्व	4
3	आदर्श निर्भय नेता स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	5-9
4	आओ स्मरण करें महान पुरूषों को ...	10-12
5	सन्ध्या	13-14
6	उपनिषदों की कहानियां	15-17
7	आर्य समाज हल्द्वानी का 133 वां वार्षिकोत्सव	18-19
8	संस्कार - समाचार	20
9	चुनाव - समाचार	21-24

विज्ञापन दरः

पिछला पृष्ठ कवर रंगीन	:	रु. 5100/-
अंदर पृष्ठ कवर रंगीन	:	रु. 3100/-
अंदर पृष्ठ ब्लैक-व्हाईट फुल	:	रु. 1100/-
अंदर पृष्ठ ब्लैक-व्हाईट	:	रु. 600/-

मुद्रक और प्रकाशक

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी एवं श्री चन्द्र प्रकाश जी द्वारा
आदर्श प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, पल्टन बाजार, देहरादून से मुद्रित एवं प्रांतीय कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) आर्य समाज मन्दिर धामावाला देहरादून से प्रकाशित।

अमृत पथ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र देहरादून होगा।

क्या अन्य मतावलम्बी हिन्दू बन सकता है ?

साभार: आर्यसमाज धामावाला, स्मारिका-125 वां समारोह

मार्च 1879 में एक दस्ती पत्र कश्मीर-नरेश ने महर्षि को हरिद्वार भेजा था। पत्र-वाहक ने महर्षि से मौखिक कहा था कि किसी आदमी ने नरेश से झूठी बात कह दी कि स्वामी जी का देहावसान हो गया है इसलिए सत्यता जानने और आप से प्रार्थना करने महाराज ने स्वयं मुझे आपके पास भेजा है। महाराज को पूरा विश्वास था कि आप सही सलामत होंगे और ऐसी अवस्था में यह संभव नहीं है कि हरिद्वार कुम्भ पर न जाएं। पत्र पर महाराज की मुद्रा अंकित थी-पत्र में लिखा था ''स्वामी जी ! कृपा करके एक ऐसी पुस्तक बना दें कि जिसमें बिना पक्षपात के यह बात सिद्ध हो जाए कि जो हिन्दू धर्म छोड़ कर दूसरे मज़हब में चले गये हैं वे फिर वापिस आ सकते हैं और यदि सम्भव हो तो यह भी सप्रमाण सिद्ध करें कि ईसाई-मुसलमान व अन्य जाति के लोग भी आर्य धर्म में आ सकते हैं और उनके साथ खान-पान में कुछ दोष नहीं आ सकता।'' स्वामी जी ने पत्र-वाहक को मौखिक उत्तर दिया था। यह सत्य है। सत्य शास्त्रों से बड़ी सरलता से सिद्ध हो सकता है। आप यहां ठहरें, जब जावें मुझे सूचित कर दें। काश्मीर-नरेश के नाम पत्र दे दूंगा। उस बात को जिसे कश्मीर-नरेश ने समझा था, और अपनी पैनी नज़र से देखा था काश! उनके उत्तराधिकारियों और देश के ब्राह्मणों ने भी उसे समझा होता है!

काश्मीर-नरेश के उत्तराधिकारी शायद आज भी उससे अवगत हों। अभी समय बीता नहीं है-सूर्य ढला नहीं है, खेतों को पानी दे लो-सूखे पौधें फिर लहलहाने लगेंगे। काश! कोई भामाशाह आज होता जो दयानन्दी प्रताप के हाथों में अपना कोश अर्पण कर देता तो आज भी बिगड़ी बात बन जाती।

महर्षि के पास अधिक समय नहीं था। कार्याधिक्य से पुन: दस्त शुरू हो गए। मिस डिक का नोटिस सामने था। और रही-सही कसर पूरी कर दी कर्नल अल्काट के तार ने, जो स्वामी जी का सहारनपुर में इन्तज़ार कर रहे थे। महर्षि ने प्रस्थान का निर्णय कर लिया।

जब स्वामी जी चलने को तैयार हुए तो पं० कृपाराम चालीस रूपये लेकर सेवा में उपस्थित हुए। इन चालीस रूपये में से पन्द्रह रूपये तो वह ही थे जो चन्दे की सूची में शामिल थे। महर्षि का दयावान् मन डोल गया। पं० कृपाराम के सिर पर हाथ फिराया, रूपया वापिस ले जाने को कहा। कहां से इकट्ठा करेगा रूपया एक गृहस्थ? पण्डित जी बज़िद कि रूपया ले लें और स्वामी जी कष्ट देना नहीं चाहते। बहुत ज़िद पर स्वामी जी ने खर्चे के लिए 30/-रूपये के लिए-दस रूपये वापिस कर दिए और 30 अप्रैल 1879 को मेलकार्ट में सहारनपुर के लिए प्रस्थान कर गए।

कृपा राम आदि का न कोई धनवान् साथी था न कोई राजा-रजवाड़ा मददगार। न धार्मिक कृत्यों में सहयोगी न कोई दु:ख में धीरज बंधाने वाला। महर्षि जा चुके थे। बारात की विदायगी के बाद जो हालत कन्या-पक्ष की होती है वही अब इन ऋषि-भक्तों की थी। संसार का नियम है, कमज़ोर को सब दबाते हैं। बस चले तो चकनाचूर कर दें। और शक्तिशाली के सब सहायक होते हैं।

पवन जरावत आगि को दीपहुं देत बुझाय।

फिर दयानन्द के यह शिष्य कमजोर क्यों रहते। जब अकेला दयानन्द स्वयं अपने हाथ से इस खेत के समस्त झाड़ झण्खाडों को फूंक गया, कूड़ा-कचरा अपने हाथों से जलाकर भूमि को तैयार कर गया, अपने हाथ से हल चलाकर सत्य और ज्ञान के बीज बो गया तो क्या हम इतने होकर, इस खेत की रक्षा भी नहीं कर सकेंगे? पादपों का सिंचन भी न कर सकेंगे?

आर्य समाज देहरादून की स्थापना

सत्य और धर्म के प्रति अटूट आस्था ने इन गिने- चुने नौजवानों के उत्साह को इतना उद्धेलित किया कि अन्ततः 29 जून 1879 को देहरादून में आर्य समाज की स्थापना हो गई। (हिन्दी जीवन-चरित्र, पृष्ठ 469, उर्दू जीवन-चरित्र, पृष्ठ 655) देहरादून के इतिहास का यह सुनहरी दिन है जब ऋषिराज के द्वारा डाले गये बीज से दून घाटी से आर्य समाज रूपी पहला पुष्प खिला था। आर्य समाज की वाटिका का प्रथम रक्षक (प्रधान) बनने का श्रेय मिला बाबू माधोनारायण को, कोषाध्यक्ष बनाये गए बाबू गोपाल सिंह ओर मन्त्रित्व का भारी भार रखा गया चिर-परिचित पं० कृपाराम जी के मज़बूत कन्धों पर।

पुराने समस्त कागजात देख लेने पर भी बाबू माधोनारयण तथा बाबू गोपाल सिंह जी के विषय में वैयक्तिक जानकारी नहीं मिल सकी परन्तु ऐसी सामग्री विद्यमान है जिससे पता लगता है कि पं० कृपाराम जी के पूर्वज रूड़की में रहते थे। पं० कृपाराम जी के नाती थे भोगपुर-निवासी आर्य समाज के महान् विद्वान् कुशल व्याख्याता, अद्भुत तार्किक पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जिन्होंने अपने युग में देश के एक कोने से दूसरे कोने तक महर्षि के सन्देश को अपनी पूरी शक्ति से गुंजाया था और वही यह बुद्ध देव जी थे, जिन्होंने यथा-समय सन्यास ग्रहण कर, स्वामी समर्पणानन्द नाम से सन्यासियों की यशः पताका को और ऊँचा फहराया था।

देहरादून में आर्य समाज की स्थापना के अनन्तर

आर्य समाज स्थापित हो गया। भिन्न-भिन्न स्थानों पर लोगों के घरों में यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग होने लगे। जिल में धर्म-प्रचार की धूम मच गयी। दयानन्द के मतवाले सर पर कफन बांधे अलख जगा रहे थे। ''वेदों के ओ ज़माने इक बार फिर से आ जा'' की अग्नि मन में प्रज्वलित किए, कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध जेहाद कर रहे थे। न स्वयं शांत थे न किसी को शांत बैठने देना चाहते थे। जब सारी जाति, सारा देश पीड़ा से कराहा रहा हो तो कोई कैसे शांत बैठने का ढोंग कर सकता है? अपने खून से आर्य समाज के पादप का सिंचन करने वाले वे महापुरूष धन्य हैं। न दिन को चैन, न रात को आराम-जिले में जैसे एक भूकम्प आ गया था।

महर्षि आर्य समाज मेरठ के दूसरे वार्षिक उत्सव पर पधारे। देहरादून के आर्य समाजी बैचेन हो उठे। यहां मेरठ आकर भी देहरादून नहीं आयेंगे क्या? महर्षि मेरठ से मुजफ्फरनगर और वहां से सहारनपुर के लिए रवाना हुए। सहारनपुर रेलवे-स्टेशन पर कितने ही भक्त स्वागतार्थ उपस्थित थे। इसी भीड़ में थे गवर्नमेन्ट स्कूल के हिन्दी अध्यापक पं० लक्ष्मीदत्त जो अपने को बड़ा ज्योतिषी बताते थे। कहने लगे कि मैं ज्योतिषी हूं प्रश्नों के सही उत्तर देता हूं। महर्षि कब चूकने वाले थे। तपाक से बोले, ''एक कौवा उड़ता जा रहा था। आम के पेड़ के नीचे से उड़ रहा था। पेड़ से आम गिरा, कौए को लगा, कौवा मर गया। न तो आम को ज्ञान था कि मैं कौवे पर गिरूं। न कौए की इच्छा थी कि आम के नीचे आकर मरूं। संयोगवश ऐसा हो गया। यही स्थिति तुम्हारे उत्तरों की है संयोग से कभी कोई उत्तर ठीक हो जाता है। ज्योतिष तुम्हारा तब सत्य जानें कि जिस नियम के आधार पर तुम सत्य की घोषणा का दावा करते हो, उस नियम से सौ सवालों का एक साथ उत्तर दे दो। यदि सब उत्तर ठीक दे दो तो ज्योतिष ठीक, यदि कुछ उत्तर ठीक हों और कुछ गलत हों तो तुम्हारा ज्योतिष छूमन्तर। क्योंकि गणित सदा सच्चा होता है।'' ज्योतिषी जी का मुख लटक गया। लाला भोला नाथ वैश्य ने नगर-भर में चिपकाए गये उन पोस्टारों का ज़िकर किया जो जैनियों ने चिपकाए थे। जिसमें महाराज की गिरफ्तारी की बात थी। महाराज हंस पड़े-सोने को जितनी भी आग दी जाती है उतना ही कुन्दन होता जाता है। मुझको यदि तोप के मुख से बांध कर भी कोई प्रश्न करे कि क्या सत्य है तो भी वेद की ऋचाएं मुख से निकलेंगी। अब तो मैंने जैनियों के और बहुत ग्रन्थ देख लिये हैं। वह मेरे प्रश्नों का क्या उत्तर दे सकते हैं?'' महाराज से पूछा गया, ''सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण कब छपेगा?'' महर्षि बोले-''वही तो कर रहा हूं। ईश्वर कृपा करे तो इसके पश्चातृ स्त्री-शिक्षा की पुस्तकें बनाऊंगा।'' यह कह कर महाराज गाड़ी में बैठ गये और मेल-कार्ट देहरादून मार्ग की और सरपट दौड़ने लगी।

■■■

मनुष्य के लिये चरित्र का महत्व

महात्मा आनन्द स्वामी

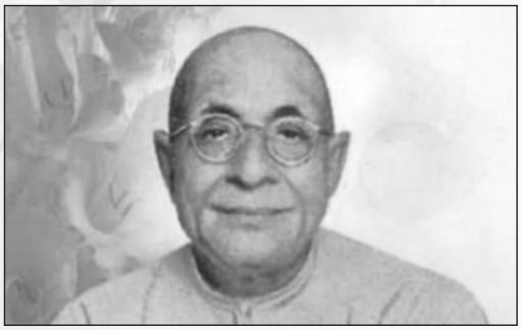

चरित्र को पवित्र बनाओं! शरीर को बलवान् एवं स्वस्थ बनाने के साथ यह भी आवश्यक है कि मनुष्य का चरित्र पवित्र हो। चरित्रहीन बलवान् तो पशुओं में भी बुरा है। वह तो समाज और परिवार का शत्रु है और मनुष्य कहलाने के भी योग्य नहीं।

यजुर्वेद 4/28 में भगवान् से यह प्रार्थना की गई है-**परिमाग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज। उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ*अनु।।** ''हे अग्ने! मुझे दुश्चरित से सदा बचाते रहो और सुचरित में सदा चलाते रहो, जिससे कि मैं उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवताओं की और बढ़ूं।

आप यह निश्चय करें कि आप किसके साथी बनना चाहते हैं? देवताओं के या असुरों के? इस निश्चय के पश्चात् यदि देवताओं का साथी बनना पसन्द किया है, तो चरित्र पवित्र बनाना होगा। चरित्र का नाश करने वाली जो बातें हैं, वेद ने उनका निषेध किया है-

सुरापान तथा बुद्धि-विनाशक अन्य मादक द्रव्यों का सेवन न करें। मांस, अण्डा आदि अभक्ष्य पदार्थ न खाएँ। जुआ न खेलें। व्यभिचार न दूसरे का अधिकार, अन्न-धन न छीनें।

सबसे सद्व्यवहार करें और सबसे बड़ी बात यह कि किसी से द्रोह न करें। पवित्र चरित्रवाला ही शीलवान् कहलाता है। शील के सम्बन्ध में कहा गया है-

अद्रोहः सर्वभूतेषु, कर्मणा मनसा गिरा। अनुग्रहश्च ज्ञानं च, शीलमेतद् विदुर्बुधाः।।

मन, वाणी और कर्म के द्वारा प्राणधारियों के विषय में द्रोह-रहित रहना और सबके भले में रहना तथा ज्ञान को बढ़ाते रहना, बुद्धिमान् लोग इसकी चरित्र का आधार कहते हैं।''

आचार-हीन के लिए तो कहीं ठिकाना ही नहीं है। क्योंकि-आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः। ''जो आचार से हीन हैं, उसे वेद भी पवित्र नहीं करते।''

आचारः प्रथमो धर्मः। आचार पहला धर्म है।

इसलिए पूरी सावधानी से अपने चरित्र की रक्षा करो। यह संसार फिसलनी घाटी है। यदि जीवन-यात्रा में कभी पांव फिसल जाए, न चाहते हुए भी चरित्र में कमजोरी आने लगे, तो प्रभु के चरणों में झुककर उससे निवेदन करो-

ओण्म् यन्मे छिद्र चक्षुयो हृदयस्य मनसो वातितृष्णं। बृहस्पतिर्मे तद् दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।

''जो मेरी आँखों में छिद्र दोष है, अथवा मेरे हृदय का तथा मन का जो गहरा गड्डा है हे बृहस्पति भगवान्! वह भर दो। हमारे लिए कल्याणकारी बनो! आप सबके स्वामी है।''

'महाभारत' में यह आदेश है- वत्तं यन्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च यानि च। अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

चरित्र की रक्षा करे। धन तो आता है और जाता है। धन की कमी से तो व्यक्ति क्षीण होता है परन्तु चरित्र से गिरा हुआ तो मरा ही हुआ है।''

■■■

आदर्श निर्भय नेता स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश

ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड

मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे आदर्श नेता और आचार्य श्रद्धेय स्वामी जी (पूर्वनाम महात्मा मुन्शीराम जी) के निकट सम्पर्क में आने का, अनेक वर्षों तक और अनेक रूपों में दुर्लभ पूर्व जन्म पुण्योपार्जित अवसर प्राप्त हुआ। पूर्व इसके कि मैं आदर्श कर्मयोगी नेता के रूप में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी वा महात्मा मुन्शीराम जी के विषय में लिखूं मैं आदर्श नेता विषयक उनके कुछ विचारों को उनके अपने एक लेख के आधार पर रख देना उचित समझता हूं।

''नेता कैसा हो?'' इस शीर्षक से श्रद्धेय स्वामी जी ने अपने अन्तिम ग्रन्थ 'मुक्ति सोपान' में एक लेख लिखा था जिसके कुछ मुख्यांश यहां दिए जाते हैं-

''त्वं सोम कृतुभिः सुकतुर्भूस्त्वं दक्षेः सुदक्षो विश्ववेदा।

त्वं वृषा वृषत्येभिर्मंहित्वा द्युम्नैभिद्युम्न्यभवौ नृचक्षाः।। ऋ.1/91/2

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है-''सौम्य गुणयुक्त नेता आप उत्तम कर्मवीरों में उत्तम कर्मवीर, बुद्धि निपुणों में भी श्रेष्ठ बुद्धि के स्वामी, सब विद्याओं से विभूषित हो, तभी आप महत्वपूर्ण होने से वर्षणीय उत्तम सुखों की वर्षा करने वाले और कीर्तिमानों में प्रशंसित कीर्ति वाले, मनुष्य के लिए दर्शनीय होते हो। इसलिए इन्हीं गुणों का आप अनुसरण करो।

''नेता कौन हो सकता है?'' वेद उत्तर देता है कि जिसमें नीचे लिखे गुण न हों उसे नेता बनने का साहस न करना चाहिए।

(1) प्रथम नेता में सब सौम्य गुणों का निवास होना चाहिए जिसका स्वभाव सरल नहीं, जो विपत्तियों को प्रसन्नतापूर्वक सहन नहीं कर सकता, जिसे कष्ट उसके उच्चासन से डिगा सकता है, वह नेता होने के योग्य नहीं। आगे उन गुणों की गणना कर दी गई है। लोक संग्रह का कार्य वही कर सकता है जो कर्मवीर हो। नेता का धर्म यही नहीं कि वह कर्मवीर हो किन्तु उसका यह भी कर्त्तव्य है कि कर्महीन पुरूषों को कर्मशील बना के तब उसे सब कर्मवीरों से भी आगे चलने वाला होना चाहिए अर्थात् कर्मवीरों में भी उत्तम कर्मवीर होना चाहिए। फिर उन कर्मों का प्रयोग बुद्धिपूर्वक होना चाहिए। नेता भी अपनी आयु के बड़े भाग को बुद्धि की स्वच्छता में लगाने से ही अग्रणी बन सकता है। इस बुद्धि की स्वच्छता के लिए सर्व विद्याओं के सार का ज्ञान होना भी नेता के लिए आवश्यक है। विद्या और तप से आत्मा की शुद्धि होती है तभी मनुष्य परोपकार वृत्ति में निमग्न होकर कर्मफल की आकांक्षा से मुक्त हो जाता है। नेता ऊपर उठता है। उस समय में, जब कर्मफल की आकांक्षा का भाव उसके मन में उत्पन्न होना बन्द हो जाता है तब उसके द्वारा जन-साधारण पर सुख की वृष्टि होती है। जो कीर्ति की परवाह नहीं करते, कीर्ति उनके पीछे भागती फिरती है। यह प्रशंसित कीर्ति नेता के काम में सहायक होती है क्योंकि उसकी उज्जवल कीर्ति को सुनकर आत्मिक तथा मानसिक भूख और पिपासा के सताए हुए जन उसकी शरण में जाते हैं और भूख और प्यास को बुझाकर शान्त हो, सृष्टि में सुख का राज्य लाते हैं। संसार के नेताओं को मन-वचन-कर्म द्वारा इस वेदाज्ञा का पालन करना चाहिए और यदि उनका जीवन तदनुसार नहीं है तो अपने किए हुए कर्मों के प्रायश्चित के लिए एकान्त में बैठना चाहिए।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी में नेता के वेदोक्त गुण पूर्ण रूप में विद्यमान थे। इसीलिए वे इतने अद्‌भुत लोकोपकारक कार्यों के

करने में समर्थ हो सके।

ईश्वर में अटल विश्वास और श्रद्धा

वास्तव में देखा जाए तो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्पूर्ण जीवन में कल्याण-कार्य का पथिक बनने की श्रद्धा ओत-प्रोत थी। उनका ईश्वर में विश्वास अटल था। मैं उस समय मायापुर वाटिका (हरिद्वार) में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के एक ब्रह्मचारी के रूप में उपस्थित था जब 10 अप्रैल, सन् 1917 को उन्होंने विधिपूर्वक सन्यासाश्रम में प्रवेश करके श्रद्धानन्द इस नाम को ग्रहण किया और अपने श्रीमुख से कहा कि, गत 20-25 वर्ष से ईश्वर और वेद विषयक श्रद्धा, माता की तरह मेरी सदा रक्षा करती रही है जैसा कि महर्षि, व्यास ने योगदर्शन के भाष्य में श्रद्धा के विषय में बताया है, 'सा हि (श्रद्धा) जननी व कल्याणी योगिनं पाति'। इसी से मुझे आनन्द की प्राप्ति हुई है। इसीलिए मैं श्रद्धानन्द इस नाम को आज से ग्रहण करता हूँ।

''यथानाम तथा गुणा:'' वाली कहावत स्वामी श्रद्धानन्द जी से बढ़ कर बहुत कम कहीं चरितार्थ हुई होगी। यदि आर्य कुमारों, युवकों और अन्य नर-नारियों में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसी उत्पन्न हो जाए तो निस्सन्देह आर्य समाज की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगे। दु:ख की बात यही है कि लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की निर्भयता, साहस, कर्मशीलता, वीरता आदि गुणों की प्रशंसा की किन्तु उनकी श्रद्धा को अपनाने का प्रयत्न बहुत कम किया गया। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सदा स्मरणीय शब्द-

श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य मे अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्यप्रति श्रद्धानन्द थे और उसी में आनन्द मानते थे। उनके लिए सत्य जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था। और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक, अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुए एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है।

निर्भयता की मूर्ति आदर्श नेता

सर्वशक्तिमान् भगवान् में अटल विश्वास के कारण श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी निर्भयता की मूर्ति बन गए थे। उनकी निर्भयता के वैसे तो सैकड़ों उदाहरण विद्यमान हैं किन्तु दो घटनाओं का उल्लेख करना ही यहां पर्याप्त है। श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी सेवाव्रती महात्मा थें जब सन् 1918 में गढ़वाल में अकाल पड़ा तो अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ श्रद्धेय स्वामी जी ने 'भारत सेवा समिति' के साथ मिलकर संगठित कार्य प्रारम्भ किया और गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों को इस सेवा कार्य के लिए अपने पास बुला लिया। मैं उस समय गुरुकुल की द्वादश श्रेणी का विद्यार्थी था। मुझे भी अपने अनेक अन्य सहपाठियों के साथ पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में गढ़वाल में सेवा कार्य का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय हम लोगों ने पूज्य स्वामी जी के हृदय की कोमलता और विशालता को भली-भांति अनुभव किया। कई बार वे हमारे साथ 18-20 मील पैदल भी चले जाते थे ताकि दुर्भिक्ष पीड़ितों की वास्तविक अवस्था का पता लगाकर उनकी सहायता की जा सके। उन्हीं दिनों की यह घटना है जिसका उल्लेख उनकी निर्भयता को सूचित करने के लिए यहां किया जा रहा है-

'सद्धर्म प्रचारक' में किसी आर्य स्वयं सेवक ने एक लेख गढ़वालियों की सामाजिक कुप्रथाओं की आलोचना से निकाला। इसे लेकर कुछ स्वार्थियों ने भोली-भाली अशिक्षित जनता को आर्यों के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विरुद्ध भड़का दिया। गढ़वाल की राजधानी पौड़ी गढ़वाल में एक बहिष्कार

सभा की आयेाजना की गई। स्वामी जी का सिर तक काट लेने की धमकियां दी जाने लगी। सभा के दिन प्रात: स्वामी जी दुर्भिक्ष पीड़ित सहायतार्थ दौरे से लौट रहे थे कि पौड़ी के कुछ सज्जन दो मील की दूरी पर ही जाकर आप से मिले और उन्होंने नम्रता पूर्वक निवेदन किया कि आप यहीं से लौट जाएं। पौड़ी में आपके जाने से बड़ा अनर्थ हो जायेगा। पर स्वामी जी इन बातों से कहां भयभीत होने वाले थे। वे श्री बैंकटेशनारायण तिवारी तथा श्रीराम जी वाजपेयी इत्यादि प्रतिष्ठित सज्जनों के मना करने पर भी शाम की सभा के लिए नियत समय 8 बजे से 15 मिनट पहले ही जाकर सभापति के आसन के समीप जा बैठे। उनकी भव्य शान्तमूर्ति को देखते ही वहां के वातावरण में अद्‌भुत परिवर्तन हो गया। स्वामी जी के साहस, धैर्य, सेवा भावना और आत्म-विश्वास की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। किसी को उनके विरोध में कुछ कहने का साहस ही नहीं हुआ। ऐसे थे वे निर्भयता की मूर्ति श्रद्धेय स्वामी जी महाराज।

गुर्खों की संगीनों के आगे छाती खोलना

दूसरी घटना जिसका इस प्रसंग में उल्लेख अत्यावश्यक है वह 30 मार्च, सन् 1919 की है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उन दिनों महात्मा गांधी जी प्रवर्तित रोलट एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का देहली में नेतृत्व कर रहे थे। 30 मार्च को देहली में पूर्ण हड़ताल थी। मध्याह्न के 12 बजे तक स्वामी जी देहली नगर का चक्कर लगाकर अपने निवास स्थान पर पहुंचे ही थे कि स्टेशन पर गोली चलने का समाचार आया। वे तुरन्त स्टेशन पर पहुंचे और वहां एकत्रित 3-4 हजार आदमियों को कम्पनी बाग में सभा के स्थान पर ले गए। सभा में लगभग 25 हजार की उपस्थिति थी। आप भाषण दे रहे थे कि चांदनी चौक के घण्टाघर पर भी गोली चलने और 10-12 व्यक्तियों के घायल होने का समाचार आया। उत्तेजित जनता को स्वामी जी ने किसी प्रकार शान्त रखा। सेना ने आकर एक बार सारी सभा को घेर लिया। फिर चीफ कमिश्नर भी कुछ घुड़सवारों के साथ आए। मशीनगनें भी लाकर खड़ी कर दी गयीं। स्वामी जी ने चीफ कमिश्नर से कह दिया कि यदि आपके आदमियों ने लोगों को उत्तेजित किया तो मैं शान्ति रक्षा का जिम्मेदार नहीं हूँ। अन्यथा शान्ति भंग न होने देने का सब उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। ऐसी उत्तेजित जनता को शान्त रखना सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द जी का ही काम था। जब 40 हजार का विशाल जन-समूह आपके पीछे-पीछे चला जा रहा था। घण्टाघर पर गुरखे सिपाही रास्ते से हटकर एक ओर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। लोगों ने समझा कि हमारे लिए रास्ता छोड़ा गया है किन्तु वहां पहुंचते ही बन्दूक दागी गयीं। लोगों में बड़ी बेचैनी और खलबली मच गई। जनता को वहां ही खड़े रहने का आदेश देकर स्वामी जी शान्त जनता पर बन्दूक दागने का कारण जानने के लिए गुरखों की ओर बढ़े। तुरन्त दो किरचें स्वामी जी की छाती पर बड़े घमण्ड में और धृष्टता के साथ यह कहते हुए गुरखों ने तान दीं कि तुमको छेद देंगे। वे शान्ति से उनके सामने खड़े हो गए और उन्होंने गुरखों से कहा, ''मैं खड़ा हूं। गोली मारो।'' इतने ही में आठ-दस और किरचें स्वामी जी की छाती पर तान दी गयीं और वैसी ही धृष्टतापूर्ण धमकियां दी जाने लगी। अब जनता के लिए शान्त रहना असम्भव हो गया। किन्तु श्रद्धेय स्वामी जी ने हाथ के इशारे से सत्याग्रह व्रत का स्मरण कराते हुए लोगों को शान्त किया। लोग उत्तेजित होकर उस समय बार-बार यही कह रहे थे कि हमें मरने दीजिए, हमें करने दीजिए आप नहीं। लगभग 3 मिनट तक किरचें इसी प्रकार स्वामी जी की छाती की ओर तनी रहीं तब एक घुड़सवार अंग्रेज सी०

आई०डी० पुलिस का मि० और्ड आया और उसने पुलिस के आदमी से पूछा कि क्या गोली चलाने की उसने आज्ञा दी थी ? स्वामी जी ने उस अंग्रेज से पूछा कि क्या आपने गोली चलाने का शब्द सुना था ? जिस पर उसने यह कहकर टालमटोल की कि मैं जांच कर रहा हूं। स्वामी जी महाराज लोगों के साथ आगे बढ़े। एक गुरखा अपनी खुकरी इधर-उधर घुमाते और चमकाते हुए उनके पास आया पर लोगों के उपहास करने पर वह बिना प्रयोग किए लौट गया। इस प्रकार वह लाल अक्षरों में लिखी जाने वाली लाल घटना स्वामी जी की निर्भयता के कारण टल गई। सत्याग्रह के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द जी की निर्भयता का उज्जवल प्रमाण रूप इस घटना का सदा स्वर्णाक्षरों में उल्लेख किया जाएगा।

इस घटना के सम्बन्ध में लौह पुरुष भारत के उप प्रधान मंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने लिखा था, ''वीरता और बलिदान की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में है। स्वामी जी छाती खोलकर सामने आ जाते हैं और कहते हैं, 'लो चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूं कि उस वीर संयासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।''

श्रद्धा के कारण अद्‌भुत आत्मिक शक्ति

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी में श्रद्धा और सर्वशक्तिमान् भगवान् की उपासना के कारण जिसे वे प्रात: कम से कम 2 घण्टे नियमपूर्वक अवश्य करते थे, ऐसा हम लोगों ने उनके साथ काशी, कलकत्ता, बम्बई तथा दक्षिण भारत की यात्राओं मे भी देखा, अद्‌भुत शक्ति का विकास हो गया था। इसका एक उदाहरण मुझे कभी भूल नहीं सकता क्योंकि जिस घटना का मैं उल्लेख कर रहा हूं वह मेरे सामने हुई। जब सन् 1926 में मैं मुलतान गुरुकुल का आचार्य था, मुलतान गुरुकुल के अधिकारियों ने चौधरी रामकृष्ण के विरुद्ध अभियोग चलाया जिसने सन् 1909 में गुरुकुल की स्थापना के लिए भूमि देकर पीछे उसे चोरियाँ आदि करवा कर बाधित कर दिया कि वे उसे छोड़कर अन्यत्र चले जाएं। पीछे गुरुकुल ताराकुण्ड में श्री परमानन्द जी की कोठियों में कई वर्ष तक चलता रहा। इस अभियोग में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को भी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्य पुराने अधिकारियों के साथ बुलाया गया और उनके स्वागतार्थ शानदार जलूस निकाला गया। चौधरी रामकृष्ण बड़े अभिमान के साथ लोगों को कहता फिरता था कि मैं कभी मकानों के बनवाने का रुपया न दूंगा और प्रिवी कौंसिल तक मुकदमा लड़ूंगा। किन्तु ज्यों ही हमारे सामने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की साक्षी हुई जिसमें उन्होंने बताया कि किस प्रकार चौधरी रामकृष्ण ने गुरुकुलार्थ भूमि दान में स्वेच्छया दी थी और उन्होंने फरवरी 1909 में उस भूमि पर गुरुकुल की स्थापना की थी। तो हमें यह देखकर (मैं स्वयं न्यायालय में उपस्थित था जब स्वामी जी महाराज की साक्षी हुई) बड़ा आश्चर्य हुआ कि चौधरी रामकृष्ण ने उनको उसी समय 10 हजार की राशि अदालत में ही दे दी और शेष लगभग 8 हजार की राशि के प्रोनोट्स दे दिए। तब अन्य महानुभावों की गवाही की आवश्यकता ही नहीं रही। श्रद्धेय स्वामी जी की आत्म शक्ति के इस चमत्कार को देखकर हम सब स्तब्ध रह गए।

अमर कर्मवीर का दिव्य सन्देश

विस्तार भय से अन्य घटनाओं का उल्लेख न करते हुए श्रद्धेय स्वामी जी के इस दिव्य सन्देश को आर्य

जनता के समक्ष रखना अपना कर्तव्य समझता हूँ जो उन्होंने मेरी प्रार्थना पर आर्यसमाज मंगलौर (दक्षिण कर्णाटक) के उत्सव के अवसर पर भेजा था। वह दिव्य सन्देश इस प्रकार था-

''तुम यह मत भूलो कि वैदिक धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नहीं है। यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना संसार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भर के लिए भी नहीं रह सकती। प्राचीनकाल में असंख्य आध्यात्कि कोषों को खोलने वाली चाबी तुम्हारे ही हाथों में दी गई थी और अब भी प्रशान्त संसार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है। किन्तु पहले तुमको अपनी सब अपवित्रताओं को धोना होगा। आज गम्भीर भाव से यह प्रतिज्ञा करो कि-

1. तुम वैदिक पंच महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे,

2. तुम अस्वाभाविक जाति भेद के बन्धन को तोड़कर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करोगे,

3. तुम अपनी मातृ भूमि से अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे और।

4. तुम आर्य समाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार, मत, सम्प्रदाय, जाति, रंग आदि भेद भावना का कुछ भी विचार न करके मनुष्यमात्र के लिए खोल दोगे।

परम पुरुष परमात्मा इस गम्भीर प्रतिज्ञा के पालन में तुम्हारे सहायक हों।

■■■

बाल आर्य वीरों ने किया लाठी और तलवारबाजी का शानदार प्रदर्शन

आर्य समाज रामनगर की ओर से आयोजित आर्य वीर दल शिविर का रविवार शाम को समापन हो गया। समारोह के दौरान बाल आर्य वीरों ने प्रतिभा का प्रदर्शन कर सभी को चौंका दिया। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बाल वीरों को पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया गया।

समापन समारोह का आयोजन आर्य उपवन में किया गया। जिसमें बाल आर्यवीरों ने 17 जून से चल रहे 23 जून तक चले शिविर में सीखी प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। बाल आर्य वीरों ने जूडो कराटे, लाठी चलाना, तलवार चलाना समेत योग आसन करके दिखाए। शिविर में आचार्य योगेन्द्र मेधावी व आचार्य निरंजन और सुकरत ने बच्चों को यह प्रशिक्षण दिया था। शिविर में 50 बच्चों ने प्रतिभाग किया था। समापन समारोह के दौरान बच्चों को प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो प्रदान किया गया। तीन कैटेगरी में परीक्षाएं कराई गई। बच्चों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसमें पुरस्कार की नकद राशि वाईपी सरीन की ओर से दी गई।

प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 500, द्वितीय स्थान वाले को 300 और तृतीय स्थान हासिल करने वाले बालक-बालिका को 200 रूपये का नकद इनाम दिया गया। कायक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज बीटी गंज के पूर्व प्रधान भीष्म गिरी गोस्वामी ने की।

इस मौके पर मंच पर आर्य समाज रामनगर रूड़की के प्रधान रामेश्वर प्रसाद, गंगनहर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक गोविंद कुमार, सौरभ भूषण, धीर सिंह रोड, संदीप यादव मनोज गोयल, नरेश यादव, सोनी रोड, नवीन त्यागी, पंकज वर्मा अवशेष त्यागी आदि मौजूद रहे।

■■■

आओ स्मरण करें महान पुरूषों को

क्रांतिकारी मंगल पांडे

क्रांतिकारी मंगल पांडे का जन्म उत्तरी भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद ग्राम में दिवाकर पांडे के परिवार में हुआ था। जन्म से ही हिन्दु धर्म पर उनका बहुत विश्वास था, उनके अनुसार हिंदू धर्म श्रेष्ठ धर्म था। 1849 में पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्मी में शामिल हुए। कहा जाता है कि किसी ब्रिगेडियर के द्वारा उनकी आर्मी में भर्ती की गयी थी। 34 बंगाल थलसेना की कंपनी में उन्हें 6ठी कंपनी में शामिल किया गया। मंगल पांडे का ध्येय बहुत ऊंचा था, वे भविष्य में एक बड़ी सफलता हासिल करना चाहते थे। 1850 के मध्य में उन्हें बैरकपुर की रक्षा टुकड़ी में तैनात किया गया। तभी भारत में एक नयी रायफल का निर्माण किया गया और मंगल पांडे चर्बी युक्त हथियारों पर रोक लगाना चाहते थे। ये अफवाह फैल यगी थी कि लोग हथियारों को चिकना बनाने के लिए गाय या सुअर के मांस का उपयोग करते हैं, जिससे हिंदू और मुस्लिम में फूट पड़ने लगी थी। इतिहास में 29 मार्च 1857 से संबंधित कई दस्तावेज है। लोग ऐसा मानने लगे थे कि ब्रिटिश हिन्दुओं और मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट करने में लगे हुए हैं मंगल पांडे ने इसका बहुत विरोध किया और इसके खिलाफ वे ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। एक दिन जब नए कारतूस थल सेना को बांटे गये थे तब मंगल पांडे ने ब्रिटिशों के इस आदेश को मानने से इंकार कर दिया और उनकी रायफल छिनने के लिए आगे बढ़े, अंग्रेज अफसर पर उन्होंने आक्रमण कर दिया। यह अकेले एक ऐसे भारतीय सैनिक थे जिन्होंने 29 मार्च 1857 को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। उस समय यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया था। हमले के कुछ समय बाद ही उन्हें फांसी की सजा सुनाई गयी और कुछ दिन बाद उन्हें फांसी दे दी गयी। लेकिन फांसी देने के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी उनके पार्थिव शरीर के पास जाने से भी डर रहे थे।

■■■

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

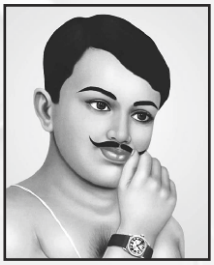

काकोरी ट्रेन डकैती और साण्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रांतिकारी आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ। भील बालकों के साथ रहते-रहते चन्द्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थी। इसलिए उन्हें संस्कृत सीखने के लिए विद्यापीठ, बनारस भेजा गया। दिसम्बर 1921 में जब गांधी जी द्वारा असहयोग में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया। जब चन्द्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम 'स्वतंत्रता' बताया। यहीं से चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चन्द्रशेखर आजाद पड़ गया था। चन्द्रशेखर की पंद्रह दिनों में कड़े कारावास की सजा दी गयी। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया। इस घटना ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया। एक युवा क्रांतिकारी प्रनवेश चैटर्जी ने उन्हें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे क्रांतिकारी दल के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल से मिलवाया। आजाद इस दल और बिस्मिल के, 'समान स्वतंत्रता और बिना किसी भेदभाव के सभी को अधिकार' जैसे विचारों से बहुत प्रभावित हए। चन्द्रशेखर आजाद के समर्पण और निष्ठा की पहचान करने के बाद बिस्मिल ने चन्द्रशेखर आजाद को अपनी संस्था का सक्रिय सदस्य बना दिया। अंग्रेजी सरकार के धन को चोरी और डकैती जैसे कार्यो को अंजाम देकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथियों के साथ संस्था के लिए धन एकत्र करते थे। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद ने अपने साथियों के साथ मिलकर सॉण्डर्स की हत्या भी की थी। आजाद का यह मानना था कि संघर्ष की राह में किसी हिंसा का होना कोई बड़ी बात नहीं है। जलियावाला बाग जैसे अमानवीय घटनाक्रम जिसमें हजारों निहत्थे और बेगुनाहों पर गोलियां बरसाई गई, ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया जिसके बाद उन्होंने हिसा को ही अपना मार्ग बना लिया।

■■■

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक, स्वराज्य की मांग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1858 को रत्नागिरि जिले के चिकल गांव तालुका में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र पंत व माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। कहते हैं कि इनकी माता पार्वती बाई ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पूरे अश्विन महीने में निर्जला व्रत रखकर सूर्य की उपासना की थी, इसके बाद तिलक का जन्म हुआ था। इनके जन्म के समय इनकी माता बहुत दुर्बल हो गयी थी। जन्म के काफी समय बाद ये दोनों स्वस्थ्य हुये। बाल गंगाधर तिलक के बचपन का नाम केशव था और यही नाम इनके दादा जी (रामचन्द्रपंत) के पिता का भी था इसलिये परिवार में सब इन्हें बलवंत या बाल कहते थे, अत: इनका नाम बाल गंगाधर पड़ा। इनका बाल्यकाल रत्नागिरि में व्यवतीत हुआ। बचपन में इन्हें कहानी सुनने का बहुत शौक था इसलिये जब भी समय मिलता ये अपने दादाजी के पास चले जाते और उनसे कहानी सुनते। दादाजी इन्हें रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, गुरुनानक आदि देशभक्तों और क्रांतिकारियों की कहानी सुनाते थे। तिलक बड़े ध्यान से उनकी कहानियों को सुनकर प्रेरणा लेते। इन्हें अपने दादाजी से ही बहुत छोटी सी उम्र में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सीख मिली। इस तरह प्रारम्भ में ही इनके विचारों का रुख क्रांतिकारी हो गया और यह अंग्रेजों व अंग्रजी शासन से घृणा करने लगे। तिलक का जन्म एक सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनका परिवार चितापावन वंश से संबंधित था जो सभी धार्मिक नियमों और परंपराओं का कट्टरता से पालन करते थें इनके पिता गंगाधर रामचन्द्र पंत रतनागिरि में सहायक अध्यापक थे। इनके पिता अपने समय के लोकप्रिय शिक्षक थे। गंगाधर रामचन्द्र पंत ने त्रिकोणमिति और व्याकरण पर अनेक पुस्तकें लिखी जो प्रकाशित भी हुई। इनकी माता, पार्वती बाई धार्मिक विचारों वाली महिला थी। इनके दादा जी स्वयं महाविद्वान थे। उन्होंने बाल को बचपन में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं और देशभक्ति की शिक्षा दी। अपने परिवार से बाल्यकाल में मिले संस्कारों की छाप तिलक के भावी जीवन में साफ दिखाई पड़ती हैं। तिलक के पिता ने घर पर ही इन्हें संस्कृत का अध्ययन कराया। जब बाल तीन साल के थे तब से ये प्रतिदिन संस्कृत का श्लोक याद करके एक पाई रिश्वत के रूप में लेते थे। पांच वर्ष के होने तक इन्होंने बहुत कुछ सीख लिया था।

■■■

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय आर्य समाजी लेखक थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मेरठ कॉलेज के प्रोफेसर और गढ़वाल जिले के तेहरी में मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया, जिसमें से वह आर्य समाज पूर्णकालिक सेवा करने के लिए सेवानिवृत्त हुए। आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, दार्शनिक तथा साहित्यकार पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म 6 सितम्बर 1881 को एटा जिले के नदरई नाम ग्राम में श्री कुंज बिहारीलाल के यहां हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में क्रमश: 1908 तथा 1912 में किया। प्रारंभ में कुछ समय तक राजकीय स्कूलों में अध्यापन किया। किन्तु 1918 में वहां से त्यागपत्र देकर डीएवी हाई स्कूल इलाहाबाद में मुख्याध्यापक के पद पर आ गये। 1936 में इस कार्य से अवकाश लेने के पश्चात उपाध्याय जी ने सम्पर्ण जीवन को आर्य समाज के लिए ही समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद पर 1941 से 1944 पर्यंत रहे। तत्पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान (1943) तथा (1946-1951) भी रहे। इसी बीच आप धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड व सिंगापुर गये। 1959 में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया तथा अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया। अत्यंत वृद्ध हो जाने पर भी आप निरंतर अध्यन व लेखन में लगे रहे। 29 अगस्त 1968 को आपका निधन हो गया।

■■■

नेताजीः सुभाषचन्द्र बोस

सुभाष चन्द्रबोस (जन्म : 23 जनवरी 1897, मृत्यु: 18 अगस्त 1945) जो नेता जी के नाम से भी जाने जाते हैं, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आज़ादी दूंगा' का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की थी तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें खत्म करने का आदेश दिया था। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमांडर' के रूप में सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो! का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली और आयरलैंड ने मान्यता दी। नेताजी की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है। जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। वहीं भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाषचन्द्र बोस की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नज़रबंद थे।

■■■

पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म 9 नवम्बर 1889 को पंजाब के जालंधर जिले के नवां शहर में हुआ था। आप स्वामी श्रद्धानंद जी के सुपुत्र थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। अध्ययन के समय ही उन्हें सद्धर्म प्रचारक के सम्पादन का मौका मिला। यहीं से उनकी प्रवृत्ति पत्रकारिता की ओर गयी। अपने जीवनकाल में उन्होंने विजय, वीर अर्जुन तथा जनसत्ता का सम्पादन किया। 'विजय' दिल्ली से प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी समाचार पत्र था। इनका देहावसान 23 अगस्त 1960 को दिल्ली में हुआ। इन्द्र जी ने शिक्षा तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान गुरुकुल कांगड़ी का संचालन एवं मार्गदर्शन है। इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने गुरुकुल की उपाधियों को केन्द्र एवं राज्य सरकारों से मान्यता प्रदान कराने का स्तुत्य एवं सफल कार्य किया। गुरुकुल में हिन्दी माध्यम से तकनीकी विषयों की शिक्षण की व्यवस्था करके उन्होंने हिन्दी की अमूल्य सेवा की। ये इतिहास के गंभीर अध्येता थे। अतः इनकी इतिहास-विषयक रचनाएं अत्यन्त प्रामाणिक एवं उच्च श्रेणी की मानी गयीं हैं। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अन्त, मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, मराठों का इतिहास उनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएं हैं।

■■■

गतांग से आगे...

अथ मनसा परिक्रमामन्त्रः

तृतीय मन्त्र

प्रतीची दिक् वरुणोऽधिपतिः पृदाक्, रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यंवयंद्विष्मस्तंवो जम्भेदध्मः।।3।।

प्रतीची दिक् = पश्चिम या पीछे की दिशा

वरुणः अधिपति = सर्वोत्तम, वरेण्य, न्यायकारी जगदीश्वर स्वामी है।

पृदाकूः रक्षिता = अशोभन शब्द करने वाले (मानवों) या अजगर आदि विषधर प्राणियों से हमारी रक्षा करने वाला है। जिसके

अन्नम् इषवः = अन्न अर्थात् पृथिवी आदि भोग्य पदार्थ बाणों के समान है। अर्थात् क्षुधा और आभाव को दूर करने वाले हैं।

तेभ्यो नमः''दध्तः= पश्चिमी दिशा को, उसके अधिपति वरुण को, अशोभन शब्दों के करने वालों से रक्षा करने वालों को तथा भोग्य पदार्थों को बारम्बार नमस्कार है। उसके हम कृतज्ञ हैं। अज्ञान से किए जा रहे परस्पर के द्वेष को हम ''वरूण'' के न्याय में समर्पित करते हैं।

विशेष-पश्चिम दिशा अन्न के लिए पुष्टिकारक है। आध्यात्मिक (ईश्वर) परक तथा आधिभौतिक (राजा परक) अर्थ

पीछे अथवा पश्चिम दिशा का अधिपति (स्वामी) सर्वश्रेष्ठ न्यायकारी, जगदीश्वर, (आधिभौ०-राजा) है। वह वरुण जगदीश्वर (=राजा) अभाव या क्षुधा से पीडित्, अशोभन क्रन्दन करने वाले मनुष्यों अथवा अन्य प्राणियों-अजगर आदि हड्डी वालों से हमारी रक्षा करता है। अनादि भोग्य पदार्थ रक्षा के साधन हैं। अर्थात् अभाव अथवा क्षुधा को इनके दान से दूर किया जाता है। पश्चिम दिशा को. वरुण जगदीश (राजा) को, अभाव तथा क्षुधा पीड़ितों तथा अशोभन शब्द करने (नारे लगाने) वाले मनुष्यों एवं प्राणियों से हमारी रक्षा करने वाले जगदीश्वर (=राजा) को, अन्नादि भोग्य पदार्थों को हमारा बारम्बार नमस्कार है। हम कृतज्ञ हैं। अज्ञानवश जो पृदाकू प्राणी हम से या हम उससे द्वेष करते हैं, उस द्वेष भाव को हम वरुण जगदीश्वर (=राजा) के न्याय में समर्पित करते हैं।

नोट-आध्यात्मिक अर्थ में जगदीश्वर और आधिभौतिक अर्थ में राजा का ग्रहण होगा। इतने मात्र से ही अर्थ का परिवर्तन हो जाएगा। अन्य सभी शब्दों का अर्थ समान है।

आधिदैविक अर्थ-पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण जगदीश्वर है। उस जगदीश्वर की न्यायकारिणी शक्ति शासन करती है। पृथिवी के हरे भरे मैदान एवम् ऊंचे-नीचे पठार हमारे रक्षक हैं। अन्न पैसे पोषक तत्त्व रक्षा के साधन हैं।

व्याख्यान

पश्चिम दिशा, पीछे की दिशा है। पीठ पीछे का अर्थ अनुपस्थिति भी है। हमारी अनुपस्थिति की अवस्था में, अथवा हमारे पीछे की दिशा में होने वाली घटनाओं का, विद्यमान कुटिल जनों का, ज्ञान हमें नहीं है। वहां पर विशेष विश्वासपात्र, वरण करने योग्य व्यक्ति नियुक्त किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को ''वरूण'' वरेण्य, प्रशंसनीय कहते हैं। वही पश्चिम

दिशा का अधिपति स्थापित किया गया है। ऐसा आशय इस मन्त्र का है।

पश्चिम दिशा सूर्यास्त की दिशा है। दिनभर परिश्रम कर, सायंकाल मनुष्य थका हारा होता है। मन भी कुछ भारी सा होता है। अस्तंगामी सूर्य मनुष्य की गिरती दशा का सूचक है। उस समय मनुष्य की दुर्बल, दयनीय, दशा देखकर हड्डी वाले विषैले अजगर आदि प्राणी अशोभन शब्द बोलते हैं। सामान्यता राजा अथवा किसी सम्पन्न मनुष्य की पीठ पीछे, द्वेषरूपी विष से भरे हुए अपशब्द, अभावग्रस्त लोग बोलते हैं, निन्दा करते हैं, अथवा बुरी आवाजें कसते हैं। सामने आकर कुछ कहने का उनका साहस नहीं होता। इसी कारण पश्चिम अर्थात् पीछे की दिशा का अधिपति (अधिकारी) सच्चरित्र, न्यायप्रिय, सर्वप्रिय, दयालु व्यक्ति नियुक्त किया जाता है। दुष्ट या अभाव पीड़ित लोग उसे दयालु न मानते हुए कमजोर समझते हैं। तब उसकी पीठ पीछे निन्दा करते हैं या आवाजे कसते हैं। वह तो दयाभाव से उनके अभावों को दूर करता है। इसी प्रकार जगदीश्वर का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप दयालु रूप है। वह प्राणियों पर दया करता है। उन्हें भोग्य पदार्थ देता है। तब वे शान्त होकर द्वेष भाव का परित्याग कर, अपने द्वेष भाव को जगदीश्वर के न्याय में समर्पित करते हैं। उपासक पश्चिम दिशा को, वरूण जदीशवर को, अशोभन शब्द बोलने वाले प्राणियों से रक्षा करने वाले को, भोग्य पदार्थों को बारम्बार नमस्कार करते हैं, कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

दक्षिण और पश्चिम दिशा का भेद

दक्षिण दिशा के प्राणी, कुटिल गति (अथवा मन वाले) न बोलने वाले, बिना बोले चुपचाप काटने (हानि पहुंचाने) वाले हैं। जब कि पश्चिम दिशा के प्राणी बोलते अधिक हैं। हानि कम पहुंचाते हैं। थोड़ा भी भोग्य पा सन्तुष्ट होते हैं। बोलने वाले के मन की बात प्रकट हो जाती है। अत: वे अपेक्षतया सरल स्वभाव वाले होते हैं। कई मनुष्य बोलते नहीं परन्तु अवसर पाकर चुपचाप, अचानक प्रहार करते हैं। वे अपेक्षया अधिक खतरनाक होते हैं। बोलने वाले अपेक्षया कम हानि पहुंचाते हैं। और शीघ्र सन्तुष्ट अथवा शान्त होते हैं।

आधिदैविक दृष्टि से ''पृदाकू'' का अर्थ ऊंचे-नीचे मैदान या पठार है। पठार अन्न या खनिज पदार्थों (भोग्य पदार्थों) के भण्डार हैं।

पश्चिम दिशा पछवा वायु की दिशा है। पछवा वायु का वर्षा तथा अन्न के परिपाक से गहर सम्बन्ध है। यह दिशा प्रभूत अन्न प्राप्ति की दिशा समझी जाती है।

क्रमश:

■■■

निवेदन

उत्तराखण्ड प्रदेश की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, सदस्यों व अमृत पथ के पाठकों से निवेदन है कि अपने समाज की गतिविधियों व समाचारों की सूचना का पूर्ण विवरण फोटो सहित तथा लेख, कविता, संस्मरण आदि अपनी फोटो सहित ई-मेल aryapsuk@gmail.com के द्वारा भेजते रहें। समय पर उपलब्ध कराई गई सूचनाएँ/समाचार/लेख आदि पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किए जाऐंगे।

पं० जगत कुमार शास्त्री

गतांग से आगे...

प्राण - प्रतिष्ठा

जो सब से उत्तम और सर्वोपरि को जानता है, वह सब से उत्तम और सर्वोपरि हो जाता है। यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। इस में सन्देह का स्थान नहीं। प्राण ही सबसे उत्तम और सर्वोपरि है। जो सर्वश्रेष्ठ को जानता है, वह अवश्य ही अपने लोगों और अपने साथियों में सर्वेश्रेष्ठ अथवा विशिष्ट हो जाता है। यह भी एक अचूक नियम है। इसमें भी सन्देह नहीं। जो सम्पदा को जानता है, वह अवश्य ही देवों और मनुष्यों में काम करने वाली सम्पदा को प्राप्त करता है। इसमें भी कोई शक नहीं है। नेत्र ही प्रतिष्ठा है। श्रोत्र ही सम्पदा है। इसी प्रकार जो मनुष्य आयतन को जानता है, वह अवश्य ही अपने लोगों और साथियों का आयतन अर्थात शरीर हो जाता है। इस में भी कोई शक नहीं। मन ही आयतन है।

कहा जाता है कि एक बार प्राण और इन्द्रियां आपस में तकरार करने लगे। प्रत्येक ने यही कहा कि मैं श्रेष्ठ हूँ।

कहा जाता है कि वे प्राण और इन्द्रियां सब के प्रतिपालक प्रजापति के पास जाकर बोलीं कि हे भगवान्! हम में सब से अधिक श्रेष्ठ कौन है? उत्तर में प्रजापति ने कहा कि तुम में से जिस ने निकल जाने पर यह शरीर सर्वथा ही व्यर्थ हो जाये, जड़े हो जाये, कुछ भी काम न कर सके, वही श्रेष्ठ है।

कहा जाता है कि वाणी शरीर से बाहिर निकल गई। वह एक वर्ष तक बाहिर रहकर वापिस आई और बोली - ''मेरे बिना तुम सब इस शरीर में कैसे रहे? उत्तर में नेत्र आदि सब बोले:- जैसे गूंगे जीवित रहते हैं, प्राण से सांस लेते हैं, आंखों से देखते हैं, कानों से सुनते और मन से विचार करते हैं, इसी प्रकार हम भी जीवित रहे। इस उत्तर को सुनकर वाणी ने अपनी कमतरी स्वीकार कर ली और वह शरीर में आकर अपना काम करने लगी।

कहा जाता है कि इसके बाद नेत्र शरीर से बाहिर निकल गये। एक वर्ष के पश्चात् लौट कर वे अन्य इन्द्रियों से बोले कि मेरे बिना तुम सब कैसे जीवित रहे? उन्होंने उत्तर दिया कि जैसे अन्धे सांस लेते हैं, बातें करते हैं, विचार करते हैं, उसी प्रकार हम भी जीवित हैं। इस पर आंखों ने भी अपनी दुर्बलता को स्वीकारा और शरीर में लौटकर अपना काम सम्भाला। कहा जाता है कि तब कान बाहिर चले गये। एक वर्ष के पश्चात् लौटकर वे अन्य इन्द्रियों से बोले कि मेरे बिना तुम सब कैसे जीवित हो? उन्होंने उत्तर दिया कि जैसे बहरे जीवित रहते हैं, आंखों से सब कुछ देखते हैं, मुंह से बोलते हैं, मन से सोचते और प्राण से सांस लेते हैं, उसी प्रकार हम भी जीवित हैं। इस पर कान भी अपनी दुर्बलता को समझकर शरीर में लौट आये और अपना काम करने लगे।

कहा जाता है कि इसके बाद मन बाहिर निकल गया और एक वर्ष के बाद वापिस आकर पूछने लगा कि मेरे बिना तुम सब कैसे जीवित रहे?

इन्द्रियों ने उत्तर दिया कि जैसे अज्ञानी वा पागल सांस लेते हैं, बोलते हैं, देखते हैं, विचार नहीं करते हैं, उसी प्रकार हम भी जीवित हैं, इस पर मन ने भी अपनी दुर्बलता को माना और शरीर में आकर अपना काम आरम्भ कर दिया।

कहा जाता है कि इसके बाद प्राण ने शरीर से बाहिर निकलने का विचार किया। बाहिर निकलते हुए उस प्राण ने उन इन्द्रियों को उन-उन के स्थान से इस प्रकार उखाड़ दिया, जैसे कि कोई अत्यन्त बलवान् घोड़ा अपने बान्धने के खूंटे को उखाड़ देता है। इस पर वे सभी इन्द्रियां बहुत घबरा गई और चारों तरफ से प्राण को घोर कर कहने लगीं। तब वाणी ने प्राण से कहा:-

''यदि हम प्रतिष्ठा हैं, तो तू भी प्रतिष्ठा है।''

तब कानों ने प्राण से कहा:-

''यदि हम सम्पदा हैं, तो तू भी सम्पदा है।''

इसके पश्चात् मन ने प्राण से कहा :-

''यदि मैं आयतन हूं, तो तू भी आयतन है।''

इस से यह स्पष्ट है कि वाणी को वाणी नहीं कहते, नेत्रों को नेत्र नहीं कहते, श्रोत्रों को श्रोत्र नहीं कहते, अपितु इन सब को प्राण ही कहते हैं। वास्तव में तो प्राण ही वाणी, नेत्र, श्रोत्र और मन का जीवन- दाता है।

विचार

यह छान्दोग्योपनिषद् के पांचवे प्रपाठक के प्रथम

खण्ड की कथा है। प्राण की बढ़ाई का वर्णन उपनिषदों में कई प्रकार से किया गया है। ऐसी ही कथायें **बृहदारण्यकोपनिषद्** और **प्रश्नोंपनिषद्** में भी आती हैं। प्रस्तुत कथा में बहुत ही आसान रीति से प्राण की बड़ाई का प्रतिपादन किया गया है। वैदिक-धर्म और उपनिषदों की शिक्षा के अनुसार जुबानी जमा-ख़र्चे या लिखित वाद-विवाद का नाम ही अध्यात्मवाद नहीं है। अध्यात्मवाद तो मानव- जाति की एक श्रेष्ठ जीवन-पद्धति है। अध्यात्मवाद का मनुष्य के व्यवाहारिक-जीवन से बहुत अधिक गहरा सम्बन्ध है। व्यावहारिक-जीवन में आध्यात्मिक सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा किये बिना तो अध्यात्मवाद के सभी वर्णन व्यर्थ ही हैं।

जब आध्यात्मिक जीवन-पद्धति का अनुष्ठान किया जाता है, तब साधक अथवा उपासक को एक नया दृष्टि-कोण अपनाना होता है। दुनियादारी की मनोवृत्ति बनानी होती है। उन्हें क्रमशः एक नियम-धारा के अनुसार दृढ़ता पूर्वक आचरण करते हुए उच्चतर-भूमिकाओं में प्रवेश करना होता है। जैसे- जैसे उस की मनोवृत्ति में उन्नति और सफलता के लिये आवश्यक परिवर्तन और लक्षण प्रगट होने लगते हैं, वैसे-वैसे ही वह सांसारिक कामनाओं और वासनाओं से ऊपर ही ऊपर उठता चला जाता है एवं अन्त में वह उन्नति के चरम-शिखिर पर पहुंच जाता है। उपनिषदों के महर्षि वारम्वार और नाना प्रकार के प्राण के स्वरूप और उसके स्वार्थ-शून्य व्यवहार का उदाहरण साधकों और उपासकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। जब प्राण का वर्णन होता है, तब उस की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करने के लिये इन्द्रियों की विषय-वासनाओं का वर्णन भी किया जाता है। इस कथा की तुलना **''देवासुर- संग्राम''** के रूप में प्राण की प्रतिष्ठा को प्रतिपादित करने वाली अलंकारिक उपनिषद् कथा से की जा सकती है। इस प्राण की प्रतिष्ठा और अधिक स्पष्ट हो जायेगी।

आंख, नाक, कान, वाणी और मन एवं त्वचा प्रत्येक इन्द्रिय का अपना-अपना कोई विशेष स्वार्थ अवश्य ही है। यद्यपि आंख, नाक आदि प्रत्येक इन्द्रिय का अपना-अपना स्वतन्त्र महत्व और स्थान है, और इन की आवश्यकता भी प्रत्येक मनुष्य को बहुत अधिक है। इन इन्द्रियों की रचना, क्षमता और कार्य- प्रणाली भी अत्यन्त आश्चर्यजनक है। तथापि इन्द्रियों की स्वार्थ-परायणता एक ऐसा तथ्य है, जिस से इन्कार नहीं हो सकता। यह इन्द्रियों की स्वार्थ-परायणता ही उन के महत्व को कम करनेवाली बात है। स्वार्थ- रहित, सर्वथा निष्काम, कर्म-योगी प्राण के मुकाबिले में तो इन्द्रियों का महत्व लग-भग समाप्त ही हो जाता है। जो स्वार्थ-परायण जन होते हैं, उनकी अप्रतिष्ठा तो सदैव होती ही है। यथा-

हम ख़ुदा थे गर न होता दिल में कोई मुदआ।
आरजूओं ने हमारी हम को बन्दा कर दिया।।

आध्यात्मिक उन्नति, आस्तिकता और आध्यात्मिक जीवन-पद्धति में सब से बड़ी बाधा यह स्वार्थ-परायणता ही है। यूं तो सांसारिक-जीवन में भी स्वार्थ-परता का परिणाम बुरा ही होता है, परन्तु आध्यात्मिक भूमिकाओं में तो स्वार्थ-त्याग के बिना निर्वाह हो ही नहीं सकता।

प्राण प्रथम तो स्वार्थ-शून्य है। फिर वह दूसरों की भलाई के लिये काम करता है। इसके साथ ही अपना काम करने के लिए प्राण को इन्द्रियों के गोलकों के समान किसी विशेष प्रकार के गोलक की या विशेष बनावट की भी आवश्यकता नहीं है। जबकि प्राणी अभी गर्भ में ही होता है, तभी प्राण शरीर में अपना काम आरम्भ कर देता है। इन्द्रियों का तो उस समय आरम्भिक निर्माण हो ही रहा होता है। प्राण न तो कभी थकता है, और न सोता है। यह कर्म-योगी तो सदैव अपने कर्त्तव्य-पालन में ही संलग्न रहता है। अपने लिये नहीं, प्राण का आस्तित्व तो दूसरों के लिये ही है।

प्रस्तुत कहानी के आरम्भ में कुछ नियम दर्शाये गये हैं, जोकि गिनती में पांच हैं। इसी प्रकार के कुछ अन्य नियमों की कल्पना भी यहां की जा सकती है। वास्तविक नियम तो यहां एक ही है। नियम यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी संकल्प-शक्ति और अपने पुरूषार्थ के द्वारा जो कुछ भी बनना चाहे, वही बन सकता है। शर्त यह है कि वह अपने आदर्श को भली प्रकार सोच-समझकर निश्चित करे, और फिर उस आदर्श की प्राप्ति के लिये नियमानुसार प्रयत्न भी

करे। क्रियात्मक अनुष्ठान तो सभी उत्तम सिद्धांतों का होता ही है और होना ही चाहिये। मुंह से गुड़-गुड़ कहने मात्र से ही तो मुह मीठा नहीं हो सकता। सिद्धांत तो वहीं है, जिसके अन्त में सिद्धि मिलती है।

जो व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ होना चाहे, वह पहिले यह भली प्रकार समझले कि सर्वश्रेष्ठ किसे कहते हैं? जो विशेषणों अर्थात् विशेष गुणों से युक्त होना चाहता है, वह यह समझ ले कि विशेषण या विशेष गुण किसे कहते हैं? विदित होकि जो मनुष्य अपनी वासनाओं को भली प्रकार से अपने वश में कर लेते है, और अपने आचरण से अपनी ऊंची योग्यता को प्रगट करता है, उसे वशिष्ठ कहते हैं। इसी प्रकार जो प्रतिष्ठा को प्राप्त करना चाहे, वह पहिले यह समझले कि प्रतिष्ठा है क्या? जो सम्पदा अर्थात् सांसारिक धन'वैभव, उत्कर्ष, मान-बड़ाई और यश को प्राप्त करने की इच्छा करे, वह सम्पदा के स्वरूप को समझले। जो व्यक्ति आयतन अर्थात् आश्रय या आधार को प्राप्त करना चाहे, वह यह समझले कि आयतन, आश्रय वा आधार क्या होता है? अपने-अपने आदर्श या उद्देश्य के विषय में किसी भी साधक या उपासक अथवा कार्यकर्त्ता को किसी भी प्रकार की भ्रान्ति में न रहना चाहिये। सभी को सब प्रकार के प्रलोभनों और सब प्रकार की प्रवंचनाओं से भी बचना चाहिये।

एक बात विशेष ध्यान देने की यह है कि विभिन्न भाषाओं में एक ही वस्तु तत्व वा भाव के लिये भिन्न-भिन्न नामों का प्रयोग होता है। उस वस्तु के रूप, रंग, आकार-प्रकार और स्वभाव में कोई भेद न होकर, केवल मात्र भाषागत नाम का ही भेद होता है। यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है। इस लिये हमें केवल मात्र मौखिक वाद-विवाद अथवा शाब्दि जमा-खर्च में ही नहीं फंसे रहना चाहिये। किताबी-उल्लेखों से आगे बढ़कर हमें यह भी देखना चाहिये कि किसी वस्तु की वास्तविकता क्या है? नाम और नामी का सम्बन्ध क्या है।? नाम-भेद के होने पर भी वस्तु का जो अभेद पाया जाता है, उस को समझ लेना सभी के लिये उपयोगी है। साधकों और उपासकों के लिए तो एकसा करना बहुत ही आवश्यक है। वे यह भली प्रकार जान लें कि जो कुछ भी वे अपनी साधना के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं, वह क्या है? कैसा है? कितना है।? कहां है? उसको कैसे और क्यों प्राप्त किया जाता है? यह ध्येय-निष्ठा बहुत बड़ी बात है।

जब कोई मनुष्य एक बार अपनी किसी दुर्बलता को जान लेता है, तब वह उसको दूर किये बिना चैन से बैठ ही नहीं सकता। यह मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है। इसी प्रकार जब कोई मनुष्य किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है, तब वह उस समय तक बेचैन रहता है, जब तक कि उसे प्राप्त न कर ले। यह अनुराग और परम प्रेम रूपी भावना ही भक्ति कहलाती है। जब मनुष्य को अपनी मन चाही सफलता मिल जाती है, तब उस का मन उस से शीघ्र ही भर जाता है। ऐसा होने पर वह उस से भी अधिक श्रेष्ठ गुण, वस्तु या भाव को प्राप्त करने के लिये कामना और पुरूषार्थ करता है। वह वारम्वार संघर्ष करके अपनी कामना, अशान्ति और अतृप्ति को दूर करता है। मनुष्य का यह कार्यक्रम तब तक चलता ही रहता है, जब तक कि साधक-मनुष्य अनुक्रम पूर्वक सर्वोपरि पद, स्थान, अवस्था, भाव या तत्व को प्राप्त नहीं कर लेता।

जिस प्राण की बड़ाई यहां दर्शाई गई है, वह एक त्यागी, तपस्वी महात्मा के समान है। उस की न कोई कामना हे, न स्वार्थ। वह मस्त और बे परवाह-सा भी है ही। परन्तु वह प्रथम कोटि का कर्त्तव्य-पालक है। अपने कर्त्तव्य-पालन में वह कुछ भी प्रमाद नहीं करता। इसलिये सब इन्द्रियों को अपनी-अपनी दुर्बलता को देखकर उस के सामने गिड़-गिड़ाना और यह कहना ही पड़ा कि तू ही हमारा मालिक और तू ही हमारा जीवन है। हमारी सब खूबियां तेरे ही दम से हैं, तेरी ही हैं, सच है, जो पहिले दुर्लभ होता है, वही त्यागवाद के अनुष्ठान से सुलभ हो जाता है। प्राण-प्रतिष्ठा की यह गाथा एक प्रतीकात्मक उपदेश है। प्राण के समान जो स्वार्थ-रहित परोपकारी और पुरूषार्थी मनुष्य होते हैं, वे जीवन की उच्चतर भूमिकाओं को, सर्वश्रेष्ठ सफलताओं को और मानव-जीवन के चरम-उद्देश्यों को भी प्राप्त कर लेते हैं।

भागती फिरती थी दुनिया,
जब तलब करते थे हम।
जब से नफरत हमने की,
वह बेक़रार आने को है।।

■■■

कार्यक्रम के शुभ अवसर पर मुख्य वक्ता आदरणीय डॉ. वेदपाल जी के ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और शिक्षाजनक प्रवचन एवं आदरणीय पंडित दिनेश पथिक जी के ज्ञानोपदेशों से परिपूर्ण वैदिक भजन श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आदरणीय आचार्य जी के प्रवचन से शिक्षा और प्रेरणा मिली कि वेद मंत्रों से जीवन को यज्ञमय बनाया जा सकता है। सुखमय जीवन बनाने के लिए करनी, कथनी, आचरण और व्यवहार एक जैसा होना चाहिए। 'स्वाहा' की व्याख्या करते हुए आपने शिक्षा दी कि हम जो बोलें सुन्दर बोलें। वह सत्य भी हो और प्रेम प्रिय भी हो। हमारी वाणी में कल्याणकारी शब्द हों। जो बोलें अन्दर से भी वैसे ही हों।

भजन गायक अमीचन्द मेहता जी का उदाहरण देते हुए आचार्य जी ने बताया कि वाणी का कितना प्रभाव होता है। अमीचन्द जी का भजन सुनकर महर्षि जी ने कहा था-

''अमीचन्द तुम हो तो हीरा, पर कीचड़ में धंसे हो''।

''महर्षि जी के इन शब्दों ने ''अमीचन्द जी का जीवन बदल दिया।''

'यह होता है वाणी का प्रभाव'।

आचार्य जी ने कहा कि 19वीं शताब्दी में जन्में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक ऐसे महापुरूष हुए, जो मानवता का कल्याण करना चाहते थे। वे स्त्री और पुरूष दोनों का समान रूप से कल्याण चाहते थे। उन्होंने कहा कि पुरूषों के समान वेद पढ़ने का अधिकार स्त्रियों को भी है तथा शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भी दोनों को है। महर्षि चाहते थे कि लड़के लड़कों की पाठशाला में और कन्यायें कन्याओं की पाठशाला में अध्ययन हेतु जावें।

वे स्त्रियों के विधवा होने पर उनके पुनर्विवाह के समर्थक थे।

समाज में छुआछूत जैसी कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। महर्षि का मानना था कि जन्म से सब मनुष्य समान है। जो जैसा कर्म करता है, वह वैसा वर्ण का अधिकारी होता है।

महर्षि जी दयानन्द जन्म से जाति को नहीं मानते थे। उनका विचार था कि गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार वर्ण का निर्धारण होता है।

महर्षि जी के स्वदेशी राज्य चाहने के सम्बन्ध में आचार्य जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि मानते थे। पराधीन होना सबसे दु:ख और स्वाधीन होना सबसे बड़ा सुख मानते थे।

आचार्य जी ने वार्षिकोत्सव कार्यक्रम समापन के अवसर पर कहा कि भारत की संस्कृति सबसे प्राचीन है। भारतवर्ष ऋषियों, महापुरूषों, चक्रवर्ती राजाओं, धनुर्धरों और वीर वीरांगनाओं का देश है। भारत दोबारा विश्वगुरू बन सकता है, इसके लिए हर घर में 'वेदज्ञान के उपदेश' हों।

कार्यक्रम के समापन समारोह दिवस पर विशिष्ट अतिथि 'माननीय श्री बंशीधर भगत जी माननीय विधायक कालाढूंगी क्षेत्र एवं पूर्व कबीना मंत्री (उत्तराखण्ड सरकार), के ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सुवचिार श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपने अगले वर्ष तक ''कम से कम दो परिवारों को'' आर्य समाज से जोड़ने का स्वयं का जो अति 'श्रेष्ठ विचार' दिया, वह हम सबके लिए प्रेरणादायक है।''

आपने नेत्र दान की भी घोषणा कर मानव सेवा और परोपकार का प्रेरणादायक 'श्रेष्ठ विचार' दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान आदरणीय श्री डी. पी. यादव जी ने आर्य समाज के उद्देश्यों से सम्बंधित प्रेरणादायक सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य हर व्यक्ति को धार्मिक और आध्यात्मिक बनने के साथ-साथ राष्ट्र भक्त बनाना है।

समापन कार्यक्रम के अवसर पर सरदार श्री हरजीत सिंह जी ने नेत्रदान महादान के लिए संकल्प लेने हेतु उत्तम प्रेरणादायक विचार दिए एवं आर्य -समाज की वरिष्ठ सदस्य एवं संरक्षक श्रीमती कान्ता विनायक जी ने भी नेत्रदान महादान पर भावुक अपील की।

श्री ललित जोशी जी को कार्यक्रम की सफलता के लिए उनके द्वारा दिए गए अमूल्य समय एवं योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद।

कैप्टन श्री प्रकाश जोशी जी को एवं उनके कैडेट्स को, कार्यक्रम को सफल बनाने में दिये गये अमूल्य समय एवं योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद।

विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए निबन्ध लेखन एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 13 विद्यालयों को प्रातियोगिताओं की सहमति हेतु निवेदन किया गया था, जिनमें से 8 विद्यालयों से निबन्ध प्राप्त हुए। वरिष्ठ वर्ग में 7 एवं कनिष्ठ वर्ग में 5 कुल 12 निबन्ध प्राप्त हुए।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए 3 विद्यालयों से 6 विद्यार्थियों ने भाग लिया। वाद-विवाद प्रतियोगिता 25.05.2024 को आयोजित हुई। इस प्रकार कुल 18 छात्र-छात्राओं ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

प्रतियोगिताओं का परिणाम।

कुल 18 प्रतिभागियों में से निबन्ध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में 9 प्रतियोगियों (निबन्ध लेखन में बरिष्ठ वर्ग एवं कनिष्ठ वर्ग में क्रमशः 1-1प्रथम, 1-1 द्वितीय, 1-1 तृतीय स्थान पर रहे, तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में 1 प्रथम, 1 द्वितीय, 1 तृतीय स्थान पर) को विजयी घोषित किया गया। शेष प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देने का निर्णय लिया गया।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं के क्रियान्वयन/आयोजन का दायित्व आर्यसमाज के सरंक्षक श्री पी एल आर्य जी व वेदप्रचार अधिष्ठाता / धर्माचार्य श्री विनोद आर्य जी ने निर्वहन किया। आर्यसमाज हल्द्वानी के यशस्वी प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार जी का मार्ग दर्शन मिलता रहा। श्री आर के राजोरिया एवं श्री संतोष भट्ट का अति उत्तम सहयोग प्राप्त हुआ। आप सभी का हार्दिक धन्यवाद।

आदरणीय डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक उपदेश देते हुए तथा मार्ग दर्शन करते हुए वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का संचालन बहुत ही कुशलतापूर्वक किया तथा कार्यक्रम के अन्त सबका कार्यक्रम को सफल बनाने में हृदय से धन्यवाद किया।

प्रचार-प्रसार वार्षिकोत्सव कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सम्बन्ध में आर्य समाज हल्द्वानी के उप प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के वरिष्ठ उप प्रधान आदरणीय डॉ. विनय खुल्लर जी के मार्गदर्शन में समाचार पत्रों के माध्यम से बहुत अच्छा प्रचार-प्रसार हुआ। डॉ. साहब को हृदय से धन्यवाद!

■■■

संस्कार – समाचार

जुलाई-अगस्त 2024

अनुशासित व संस्कारवान युवा ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक

प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री

जीवन में अनुशासन व वैदिक शिक्षा जीवन को सही दिशा व मार्ग प्रशस्त करते हैं। अनुशासित व संस्कारवान युवा ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक होते है। यह विचार आर्य समाज सेक्टर वन बी.एच.ई.एल में चल रहे वैदिक संस्कार एवं चरित्र निर्माण आवासीय शिविर के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग कर रहे प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आप सभी ने इस शिविर में जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है। निश्चय ही जीवन में आने वाले समय में इससे आप सभी में जहा आत्मविश्वास पैदा होगा वहीं एक नई ऊर्जा का संचार होगा। आने वाले समय में आप सभी को राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देकर देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है। मैं सभी प्रतिभागियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. अनिल शर्मा ने कहा की आप सभी के बीच आकर मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं शिविर में भाग लेने वाले बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। इस अवसर पर बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई प्रस्तुतियों को देखकर हम सब में भी ऊर्जा का संचार हुआ है। आप सभी बधाई के पात्र है। जिस देश की भावी पीढ़ी संस्कारवान होती है। उस देश व समाज को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। वशिष्ट अतिथि जगदीश लाल पाहवा ने कहा की इस प्रकार के आयोजन समाज की आवश्यकता है। इनसे बच्चों में अपनी संस्कृति व वैदिक शिक्षा की जानकारी तो मिलती ही है। वहीं उनमें संस्कार भी पल्लवित होते हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से देश के लिए आर्य वीर तैयार हो रहे है। आर्य समाज प्रधान डा. महेंद्र आहुजा ने कहा कि आर्य समाज शाखा भेल सेक्टर वन द्वारा लगातार बच्चों को शिक्षित व आर्य सिद्धांतों के प्रति जागरूक करने की दिशा में इस प्रकार के अयोजन किये जाते हैं। जिनका उद्देश्य बच्चों को अपनी गौवशाली आर्य परम्परा व अनुशासन से अवगत करा उन्हें राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है। इस अवसर पर आर्य समाज संरक्षक- ओ.पी. बत्रा, प्रधान-डाक्टर महेन्द्र आहुजा, मंत्री-राकेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष-राजवीर सिंह, शिविर मुख्याधिष्ठता- आचार्य योगेन्द्र मेधावी शिविर प्रमुख संयोजक मदन सिंह कृष्ण कुमार चंदवानी नवीन कुमार, सिंह, नरेन्द्र आर्य विभु ग्रोवर कोटद्वार व नगर के अन्य अतिथि उपस्थित रहे।

■■■

जुलाई-अगस्त 2024

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राकृतिक आहार

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राकृतिक आहार, ज्ञान, शारीरिक विकास, तथा कला कौशल अनिवार्य है- डॉ. B K S संजय, पद्म श्री, आर्थोपेडिक सर्जन

आर्य समाज मंदिर धामावाला के तत्वाधान में श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम द्वारा आयोजित संस्कार शाला-शिविर का समापन समारोह आश्रम के परिसर में बालक-बालिकाओं के प्रदर्शन के साथ संपन्न।

आश्रम में दस दिन से चल रहे शिविर में बच्चों को शारीरिक, मानसिक, आत्म विश्वास, तथा बौद्धिक विषयों पर गुरुकुलों के प्रशिक्षकों- आचार्य योगेंद्र मेधावी जी, हरिद्वार एवं आचार्य निरंजन आर्य जी, इटारसी तथा सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों के व्याख्यानों के माध्यम से बच्चों को प्रशिक्षित किया गया। अनुशासन, राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना, पर्यावरण, एक दुसरे का सहयोग, सफलता प्राप्ति, शिष्टाचार आदि विषयों पर जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिवस दिनांक 1 जून 2024 को बच्चों द्वारा अतिथियों, अभिभावकों के समक्ष योग, जूडो, लाठी, तलवार, डंबल , लेजियम आदि के करतब दिखाए गए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. B K S संजय, पद्म श्री आर्थोपेडिक सर्जन ने अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राकृतिक आहार, ज्ञान, शारीरिक विकास, तथा कला कौशल अनिवार्य है। उन्होंने तीन मुख्य बातों पर बल दिया (BKS) अर्थात Behaviour, Knowledge, Skill (व्यव्हार, ज्ञान, कौशल)। आश्रम के प्रधान श्री सुधीर गुलाटी जी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उनके द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में योगदान के लिए राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री सम्मान तथा उनके समाज के प्रति योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि डा. संजय जी सड़क दुर्घटनाओं के विषय पर जागरूकता अभियान चला रहे हैं। कार्यक्रम में आश्रम के अधिष्ठाता श्री सुभाष गोयल, कोषाध्यक्ष श्री नारायण दत्त पंचाल, श्री नवीन भट्ट, श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेव, श्री सतीश चंद्र, श्रीमती सुदेश भाटिया, श्रीमती स्नेहलता खट्टर, कर्नल अवनीश शर्मा, श्री दिगम्बर सिंह जी तथा अन्य अतिथि गण उपस्थित रहे।

■■■

चुनाव – समाचार

स्त्री आर्य समाज मन्दिर विकासनगर वर्ष 2024-25 की कार्यकारिणी

क्रम	पद	नाम
1.	प्रधान	श्री नरेन्द्र कुमार वर्मा
2.	उप-प्रधान	1. श्रीमती सोनिका वालिया 2. श्रीमती नन्दिनी गुप्ता
3.	मंत्री	श्री दीपक बंसल
4.	उप-मंत्री	1. श्री रमन डंग 2. श्रीमती कौमुदी वर्मा
5.	कोषाध्यक्ष	श्री विवेक कुमार
6.	सह-कोषाध्यक्ष	श्रीमती सावित्री राणा
7.	आर्य वीरदल अधिष्ठाता	श्री विजेन्द्र सैनी
8.	सह आर्य वीरदल अधिष्ठाता	श्री सतेन्द्र सैनी
9.	पुस्तकाल्य अध्यक्ष	श्रीमती रीना सैनी
10.	ऑडीटर	श्रीमती रेणू रानी
11.	जिला प्रतिनिधि	1. श्री दयानन्द तिवारी 2. श्री नरेनद्र वर्मा 3. श्री विवेक कुमार 4. श्री दीपक बंसल 5. श्री कौमुदी वर्मा 5. श्रीमती नन्दिनी गुप्ता 7. श्रीमती सोनिका वालिया 8. श्रीमती अनुजा वर्मा 9. श्रीमती सवित्री राणा

रोहित तीसरी बार बने आर्य समाज के प्रधान

आर्य समाज मंदिर करनपुर की कार्यकारिणी का रविवार को चुनाव संपन्न हुआ। जिसमें रोहित आर्य को तीसरी बार निर्विरोध प्रधान पद के लिए चुना गया है। मंत्री रामबाबू सैनी ने बताया कि आर्य समाज के प्रधान रोहित आर्य की अध्यक्षता एवं चुनाव अधिकारी सतयानारायण सक्सेना की देखरेख में चुना प्रक्रिया सम्पन्न हुई। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में सभी पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ। जिनमें पवन कुमार सब्बरवाल व पारितोष रस्तोगी को उपप्रधान, रामबाबू सैनी को मंत्री, अश्विनी कुमार मिनोचा को उपमंत्री, राजेश वर्मा को कोषाध्यक्ष, धीरेंद्र गांधी को सहायक कोषाध्यक्ष, राजकुमार त्यागी को अधिष्ठाता आर्यवीर दल, सत्यनारायण सक्सेना को सदस्य, पवन कुमार सब्बरवाल और राजकुमार त्यागी को जिला प्रतिनिधि, पवन सब्बरवाल को प्रांतीय प्रतिनिधि चुना गया है।

भद्रकाली मंदिर में विशेष अनुष्ठान

डोईवाला के लछीवाला में स्थित भद्रकाली मंदिर में वार्षिक उत्सव एवं भंडारा बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। मंदिर में भद्रकाली माता की विधिवत पूजा अर्चना कर देश में खुशहाली की प्रार्थना की। मंदिर में हवन पूजन के बाद भक्तों में भंडारे का प्रसाद वितरित किया गया।

'आर्य समाज काशीपुर का वार्षिक चुनाव संपन्न'--

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड द्वारा भेजे गए पर्यवेक्षक की उपस्थिति में 17 सदस्यीय कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित।'

'काशीपुर।' आर्य समाज काशीपुर का वर्ष 2024-25 का वार्षिक चुनाव सोमवार दिनांक 27 मई 2024 तय तिथि पर आर्य समाज मंदिर मोहल्ला लहोरियां में संपन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा देहरादून, उत्तराखंड द्वारा पर्यवेक्षक के रूप में भेजे गए प्रांतीय सभा के आय व्यय निरीक्षक एवं रुद्रपुर आर्य समाज के प्रधान श्री पृथ्वीराज आर्य जी ने सारी चुनावी प्रक्रिया को कुल 17 पात्र सभासदों के मध्य संपन्न कराया। चुनाव में एक बार पुनः सर्वसम्मति से प्रेम प्रकाश गुप्ता- प्रधान और संजय अग्रवाल - मंत्री पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए वहीं उपप्रधान पद पर अतुल कुमार आजाद एवं अजय अग्रवाल निर्वाचित किए गए, उप मंत्री पद पर मनोज कुमार विश्नोई, दूसरे उप मंत्री और प्रचार मंत्री पद पर विकल्प गुड़िया निर्वाचित घोषित किए गए, कोषाध्यक्ष पद पर अमरीश गर्ग, आय व्यय निरीक्षक पद पर सुरेश चंद्र तिवारी, पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर सुनील कुमार उपाध्याय, अधिष्ठाता आर्यवीर दल हेतु मयंक अग्रवाल एवं द्रोणा सागर स्थित श्री मद्यानंद आश्रम हेतु एडवोकेट वीरेंद्र कुमार चौहान का प्रबंधक पद पर भी निर्विरोध निर्वाचन संपन्न हुआ। किसी भी पद पर किसी का कोई विरोध नहीं था इसलिए सभी पदों पर सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचन संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त उपरोक्त महानुभाव अंतरंग सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए जिनमें सर्व श्री शिव चरण सिंह विश्नोई, अवध कुमार अग्रवाल, विजय कुमार शर्मा, मयंक गुप्ता, मनोज कुमार सक्सेना एवम प्रभाकर पाठक। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने आर्य समाज काशीपुर के सबसे कर्मठ एव वयोवृद्ध सभासद श्री शिवचरण विश्नोई जी को आर्य समाज काशीपुर का सर्वसम्मति से संरक्षक मनोनीत किया जिसका समर्थन उपस्थित लोगों ने ध्वनि मत से किया। इस प्रकार आर्य समाज का वर्ष 2024 -25 का चुनाव सवसम्मति से निर्विरोध संपन्न हुआ। चुनाव पर्यवेक्षक श्री आर्य ने निर्विरोध संपन्न हुए चुनाव हेतु सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी तथा सभी निर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्यों से आर्य समाज को मजबूत एवं गतिशील बनाने हेतु अपनी साहसी भूमिका अदा करने हेतु प्रेरित, और प्रोत्साहित भी किया अंत में सभी सभासदों से प्रतिज्ञा फार्म भी भरवाए गए और अन्य जरूरी नियमावली को पालन करने का निर्देश भी दिया गया। इस अवसर पर चुनाव पर्यवेक्षक श्री आर्य ने कहा कि उत्तराखंड में स्थापित समस्त आर्य समाज आर्य प्रतिनिधि सभा देहरादून, उत्तराखंड के अधीन है और उससे ही सम्बद्ध है जानकारी में आया है कि काशीपुर के कुछ आर्य समाजी समाचार पत्रों के माध्यम से अनर्गल बयानबाजी कर आर्य समाज की छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें पूर्व में भी प्रांतीय सभा द्वारा समझाने का प्रयास किया गया लेकिन वह अपनी इन हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं यदि इस प्रकार की पुनरावृत्ति दोबारा हुई तो प्रांतीय सभा को उनके खिलाफ अनुशानात्मक कार्यवाही अमल में लानी पड़ेगी। अंत में शांति पाठ के पश्चात चुनावी प्रक्रिया एवम सभा संपन्न हुई।

■■■

ओ३म्

संस्थापित 1879

वेदों की ओर लौट चलो

आर्य समाज मन्दिर, धामावाला

देहरादून-248001

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) के अन्तर्गत

आर्य समाज मंदिर धामावाला, देहरादून के 146 वे वार्षिक सत्र 2024-25 के लिए चुनाव सोहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न चतुर्थ बार सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए

सुधीर गुलाटी - प्रधानः नवीन भट्ट - मंत्री : नारायण दत्त पंचाल - कोषाध्यक्ष

आर्य समाज मंदिर धामावाला देहरादून के 146 वे वार्षिक सत्र 2024-25 के लिए रविवार दिनांक 26.05.2024 को आयोजित हुए वार्षिक अधिवेशन - साधारण सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) द्वारा मनोनीत पर्यवेक्षक श्री चन्द्र प्रकाश जी, मंत्री, प्रांतीय सभा की उपस्थिति में निम्नलिखित पदाधिकारी/सदस्य सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए।

क्रम	पद	नाम
1.	प्रधान :	श्री सुधीर गुलाटी
2.	मंत्री :	श्री नवीन भट्ट
3.	कोषाध्यक्ष :	श्री नारायण दत्त पंचाल
4.	उप प्रधान :	श्रीमती स्नेह लता खट्टर/श्री सुभाष चन्द्र गोयल/श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेव
5.	उप मंत्री :	श्री सतीश चन्द्र/श्री अश्विनी पंचाल/श्रीमती सुमिता चड्ढा
6.	सह कोषाध्यक्ष :	श्री सुरेश कुमार अरोरा
7.	पुस्तकाल्याध्यक्ष :	श्री बसन्त कुमार
8.	आर्य वीर दल :	श्री अलोक कुमार कश्यप
9.	लेखा निरीक्षक :	श्री विश्वमित्र गोगिआ
10.	सह-लेखा निरीक्षकः	श्री सुरेश नय्यर
11.	मीडिया प्रभारी :	श्री अभिनव आर्य
12.	अन्तरंग सदस्य :	श्री अशोक आर्य/श्री अशोक नारंग जी/श्री पवन कुमार आर्य /श्री मदन मोहन आर्य/श्री प्रताप सिंह रोहिल्ला/श्रीमती शिक्षा गर्ग/श्री देवेन्द्र कुमार सैनी
13.	विशेष आमन्त्रित सदस्यः	श्रीमती शैल ढींगरा/श्रीमती सुदेश भाटिया/श्री विनीत कुमार मदान/ श्री ब्रह्म देव गुलाटी/श्री आदर्श कुमार अग्रवाल/श्री लक्ष्मण दास आर्य/श्री दिलीप कुमार आर्य/श्री कुलभूषण कठपालिया/श्री ओम प्रकाश नांगिया/श्री ओम प्रकाश मल्होत्रा/श्री हर्ष देव शर्मा/ श्रीमती रेखा आर्या/ प्रधान-स्त्री आर्य समाज धामावाला/श्रीमती, अरूणा गुप्ता मंत्री-स्त्री आर्य समाज धामावाला
	जिला सभाः	श्री सुधीर गुलाटी, श्री नवीन भट्ट, श्री नारायण दत्त पंचाल, श्री सुभाष चन्द्र गोयल/श्रीमती स्नेह लता खट्टर/श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेव/श्री सतीश चन्द्र
	आर्य समाज कौलागढ़ :	श्री सुधीर गुलाटी, श्री नवीन भट्ट, श्री नारायण दत्त पंचाल, श्री सुभाष चन्द्र गोयल/श्री सतीश चन्द्र

■■■

ओ३म्

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम देहरादून के वार्षिक चुनाव सौहार्दपूर्ण वातावरण में निर्विरोध संपन्न
प्रधानः श्री सुधीर गुलाटी, अधिष्ठाता, श्री सुभाष चन्द्र गोयल, कोषाध्यक्षः श्री नारायण दत्त पंचाल

आर्य समाज मंदिर धामावाला, देहरादून द्वारा संचालित श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के 101 वें वार्षिक सत्र 2024-25 के लिए रविवार दिनांक 26.05.2024 को आयोजित हुए वार्षिक अधिवेशन-साधारण सभा में निम्नलिखित पदाधिकारी/सदस्य सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए।

क्रम	पद	नाम
1.	प्रधान :	श्री सुधीर गुलाटी
2.	अधिष्ठाता :	श्री सुभाष चन्द्र गोयल
3.	सह - अधिष्ठाता :	श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेव
4.	कोषाध्यक्ष :	श्री नारायण दत्त पंचाल
5.	सह - कोषाध्यक्ष :	श्रीमती स्नेह लता खट्टर
6.	भण्डाराध्यक्ष :	श्रीमती सुदेश भाटिया
7.	व्यवसायध्यक्ष :	श्री सतीश चन्द्र
8.	सदस्य :	श्री नवीन भट्ट, श्री अश्विनी पंचाल, श्रीमती सुमिता चड्ढा
9.	भूमि दानदाता परिवार :	श्री जयंत हरिहर लाल एवं श्री नितुन्ज हरिहर लाल
10.	विशिष्ठ सदस्य :	श्री आशुतोष गुलाटी, डॉ. आदित्य आर्य, श्री अजय वर्मा, श्री अशोक नारंग
11.	विशेष आमन्त्रित सदस्य :	श्री विश्वमित्र गोगिआ, श्रीमती शैल ढींगरा, श्रीमती मधु आर्या, श्री विनीत कुमार मदान, श्रीमती मृदुला गुलाटी, श्रीमती हिना अग्रवाल
13.	विशिष्ठ आमन्त्रित सदस्यः माननीय जिलाधीश/माननीय पुलिस प्रमुख/माननीय मुख्य चिकित्सा अधिकारी/माननीय समाज कल्याण अधिकारी/माननीय जिला विद्यालय निरीक्षक	

■■■

स्त्री आर्य समाज करणपुर-वर्ष 2024-25 के वार्षिक चुनाव

दिनांक 05.06.2024 को स्त्री आर्य समाज करणपुर के चुनाव सम्पन्न हुए। सर्वसम्मति से सदस्यों को निर्वाचित किया गया। पदाधिकारी एवं सदस्यों की सूची निम्न है।

क्रम	पद	नाम
1.	प्रधान	श्रीमती सुख वर्षा जी
2.	उप-प्रधान	श्रीमती शारदा त्रिपाठी जी
3.	मंत्राणी	श्रीमती संगीता आर्या जी
4.	उप-मंत्राणी	श्रीमती सुनीता नागपाल जी
5.	उप-मंत्राणी	श्रीमती ललिता जी
6.	कोषाध्यक्षा	श्रीमती पूजा सेठी जी
7.	उप-कोषाध्यक्षा	श्रीमती निराजना गुप्ता जी
8.	आर्य वीरांगना	श्रीमती निशा गुप्ता जी
9.	आर्य सह वीरांगना	श्रीमती निमिषा जी
10.	लेखा निरीक्षिका	सुश्री उषा त्यागी जी

सदस्या : 1. श्रीमती प्राची आर्या जी 2. श्रीमती सरोज शाह जी 3. श्रीमती सदेकिला जी 4. श्रीमती गर्विता जी

संरक्षिका : 1. श्रीमती स्वराज गुप्ता जी 2. श्रीमती इन्द्रा सूद जी

■■■

स्त्री आर्य समाज करणपुर की नई कार्यकारिणी

आर्य समाज मन्दिर विकासनगर की कार्यकारिणी

आर्य समाज मन्दिर धामावाला देहरादून के 146 वें वार्षिक सत्र 2024-25 के लिए नव निर्वाचित पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य

योगश्वर श्री कृष्ण चन्द्र महाराज जी के जन्मोत्सव

''श्री कृष्ण जन्माष्टमी'' की देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें

अमृत पथ

कार्यालय : आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी)
आर्य समाज मन्दिर, धामावाला, देहरादून
Email : aryapsuk@gmail.com
Facebook : Arya Pratinidhi Sabha Uttarakhand

अदेयता की स्थिति में कृपया लौटाएं, 'अमृत पथ' मासिक, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आर्य समाज मन्दिर, धामावाला, देहरादून-248001
श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी (प्रधान) मो.: 9837011321, श्री चन्द्र प्रकाश जी (मंत्री) मो.: 9761939183, ज्ञान चन्द गुप्ता आर्य (प्रबन्ध सम्पादक) मो.: 9897346730